बाप पढ़ाता विदेही होने की पढ़ाई

रोज़ खबरदार करते जो हम भूलते

माया तूफानों से हार खाने नही देंगे

ज्ञान का तीसरा नेत्र से आत्मा को देखना

अशरीरी बनने का अभ्यास करना

आसुरी चलन नही कोई चलनी

दैवी कैरक्टर धारण करने

बालक सो मालिक की रखनी स्मृति

जो बनाती स्वराज्यधिकारी और

वरसे की अधिकारी

मनमनाभव के मन्त्र से खजाने भरो

व्यर्थ से भी मुक्त रहो

श्रेष्ठ भाग्य की मौज़ में रहो

परमात्म मोहब्बत के झूले झूलो

मेरा बाबा

ॐ शांति!!!